लॉक

अनुभववाद के जनक

ग्रंथ →

1. एन ऐसे कन्सर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग

ज्ञान मीमांसा

लॉक अनुभववाद के जनक हैं तथा मानते हैं कि समस्त ज्ञान का स्रोत अनुभव है तथा अनुभव का अर्थ है - इंद्रिय प्रत्यक्ष। उन्होंने माना कि बुद्धि में कोई भी ज्ञान जन्मजात नहीं होता।

1. मनस् - एक कोरी पट्टी (Tabula Rasa) → लॉक ने कहा कि मनुष्य का मन जन्म के समय एक कोरी पट्टी, खाली अलमारी या सफेद कागज़ की तरह होता है जिस पर कुछ भी अंकित नहीं होता। धीरे-धीरे इंद्रिय अनुभव के माध्यम से ज्ञान विचारों के रूप में उस पर अंकित होता जाता है। अत: अनुभव ही ज्ञान का जनक है।

2. समस्त ज्ञान का स्रोत अनुभव है → लॉक कहते हैं कि अनुभव से पूर्व कोई ज्ञान नहीं होता। हमारा समस्त ज्ञान अनुभव से ही प्राप्त होता है। अर्थात् - बुद्धि में ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जो इंद्रियों के माध्यम से न आया हो।

इंद्रिय ज्ञान के अभाव में बुद्धि कोई ज्ञान नहीं दे सकती।

3. संवेदना और चिंतन ज्ञान के दो प्रवेश द्वार हैं → लॉक कहते हैं कि ज्ञान के उद्भव में पहले संवेदन होता है जिसे इंद्रिय प्रत्यक्ष कहते हैं। इस इंद्रिय अनुभव से प्राप्त सामग्री को बुद्धि व्यवस्थित रूप देती है, जिसे चिंतन या स्वसंवेदन कहते हैं। इस प्रकार संवेदन पहले है, चिंतन बाद में। संवेदन के बिना चिंतन भी नहीं हो सकता।

4. अनुभव के बाद बुद्धि सक्रिय होती है → लॉक ज्ञान की प्रक्रिया में बुद्धि के महत्व को अस्वीकार नहीं करते, क्योंकि मानव एक बौद्धिक प्राणी है। लेकिन वे कहते हैं कि ज्ञान की सामग्री अनुभव से आती है और सामग्री के बिना बुद्धि क्रियाशील नहीं हो सकती। अतः ज्ञान प्राप्ति में अनुभव ही प्राथमिक है।

5. ज्ञान के स्तर → लॉक के अनुसार ज्ञान के तीन स्तर हैं -

(a) अन्तःप्रत्यक्ष ज्ञान → यह सहज एवं स्वयंसिद्ध ज्ञान है। इस स्तर में हमें प्रत्ययों की संगति का ज्ञान स्वतः हो जाता है, जैसे - सफेद काला नहीं है, त्रिभुज गोल नहीं है, तीन दो से ज्यादा है, आदि। ये सभी ज्ञान निश्चित, संदेहरहित तथा स्वतःसिद्ध हैं।

बाह्य प्रत्यक्ष ज्ञान → यह बाह्य जगत के पदार्थों का ज्ञान है। इसे संवेदन ज्ञान भी कहते हैं। यह इंद्रियों से प्राप्त प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। यह सत्य

तो होता है, लेकिन परिवर्तनशील होता है, क्योंकि विश्व के पदार्थ परिवर्तित होते रहते हैं।

(ब) परोक्ष ज्ञान → यह अप्रत्यक्ष ज्ञान है। इसकी सत्यता के लिए अन्य प्रमाण की आवश्यकता होती है। जैसे त्रिभुज की तीन भुजाओं और दो भुजाओं में किसका योग ज़्यादा होगा - यह ज्ञान हमें स्वतः नहीं हो जाता। इसके लिए हमें अन्य ज्ञान का सहारा लेना पड़ता है। अतः यह अप्रत्यक्ष ज्ञान कहलाता है।

6. अन्तः प्रत्यक्ष व परोक्ष ज्ञान में अंतर →

1. अन्तः प्रत्यक्ष ज्ञान स्वतः सिद्ध है जबकि परोक्ष ज्ञान की सत्यता अन्य ज्ञान के माध्यम से सिद्ध होती है।
2. अन्तः प्रत्यक्ष ज्ञान संदेहरहित है, परोक्ष ज्ञान नहीं।
3. परोक्ष ज्ञान प्रत्यक्ष पर आधारित है, प्रत्यक्ष ज्ञान किसी पर आधारित नहीं है।

7. ज्ञान की सीमा → लॉक के अनुसार हमारा अनुभव या ज्ञान प्रत्ययों तक ही सीमित है। प्रत्ययों से बाहर हम कुछ नहीं जान सकते। प्रत्यक्ष ही हमारे ज्ञान की सीमा है। लॉक कहते हैं कि मानव अपूर्ण है तथा उसकी इंद्रिय शक्ति भी सीमित है। हमें ज्ञान प्रत्ययों के रूप में प्राप्त होता है और इन प्रत्ययों के अनुरूप वास्तव में सत्ता है या नहीं, यह जानना अत्यन्त कठिन है। लॉक का कथन है - "वस्तु है यह मैं जानता हूँ, लेकिन वह क्या है यह मैं नहीं जानता।"

लॉक कहते हैं कि वस्तुतः हमारा

ज्ञान वस्तु तक नहीं पहुँच पाता। वस्तु से आए प्रत्ययों से ही हम जान सकते हैं कि वस्तु कैसी है। अतः प्रत्यय और वस्तु में संगति है या नहीं, यह जानने का हमारे पास कोई तरीका नहीं है। यही हमारे ज्ञान की सीमा है।

आलोचना :-

1. लॉक संवेदनाओं को ग्रहण करते समय मन को निष्क्रिय मानते हैं जबकि मनोविज्ञान के अनुसार मन चयन करके ही संवेदना ग्रहण करता है।

2. लॉक के दर्शन में वस्तु और ज्ञान में एक अंतर (Gap) रह जाता है क्योंकि वे कहते हैं कि वस्तु स्वयं वास्तव में क्या है यह जानना संभव नहीं है। हम तो केवल प्रत्ययों को ही जानते हैं।

3. लॉक कहते हैं हमारे ज्ञान का एकमात्र स्रोत अनुभव है और अनुभव व्यक्तिगत होता है। जबकि ज्ञान को निश्चित और सार्वभौम होना चाहिए।

4. लॉक ने ज्ञान के सिद्धांत की अपेक्षा हमें अज्ञानता का सिद्धांत दे दिया क्योंकि ज्ञान की सत्यता को सिद्ध करने का हमारे पास कोई तरीका ही नहीं है।

5. वस्तुतः बुद्धि और अनुभव दोनों मिलकर ही एक सम्पूर्ण ज्ञान की रचना कर सकते हैं, अलग अलग नहीं।